डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–16 अप्रैल, 2020)

कृष्ण भक्ति काव्य परंपरा में सूर का स्थान

सगुण काव्य परंपरा में कृष्ण भक्ति काव्यधारा निर्गुण विचारधारा के खिलाफ विस्फोट है। हिन्दी में कृष्ण भक्ति परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास हैं। भक्तिकाल में कबीर के बाद विष्णु के अवतार स्वरूप 'कृष्ण' का ब्रह्म रूप में चित्रण अपने आप में एक बड़ी घटना है। इसे टर्निंग प्वाइंट भी कह सकते हैं। मध्य युग में कृष्ण भक्ति का प्रचार ब्रज मण्डल में बड़े उत्साह और भावना के साथ हुआ। ब्रज मण्डल में अनेक कृष्ण भक्ति संप्रदाय सक्रिय हुए। इनमें वल्लभ, निम्बार्क, राधा वल्लभ, हरिदासी (सखी संप्रदाय) और चैतन्य (गौड़ीय संप्रदाय) आदि मुख्य हैं। इन संप्रदायों से जुड़े ढ़ेर सारे कवियों में वल्लभ संप्रदाय के वल्लभाचार्य और उनके पुष्टिमार्ग में दीक्षित षिष्य सूरदास हिन्दी के सर्वाधिक समर्थ कवि के रूप में लोकप्रिय हुए। वल्लभ संप्रदाय का दार्षनिक सिद्धांत ''षुद्धाद्वैत'' तथा साधना मार्ग ''पुष्टिमार्ग'' कहलाता है। पुष्टिमार्ग का आधार ग्रंथ 'भागवत' या 'श्रीमदभागवत' है। सूरदास गहराई के साथ 'वल्लभ संप्रदाय' और 'पुष्टिमार्ग' से से जुड़े थे और उनकी रचना का आधार ग्रंथ 'श्रीमद्भागवत' ही था।

'पुष्टिमार्ग' में दीक्षित 8 कवि हैं, जिनमें सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, और कृष्णदास को स्वयं वल्लभाचार्य ने दीक्षित किया था। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र आचार्य विट्ठलनाथ ने चार कवियों– छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास को पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया। 'पुष्टिमार्ग' का तात्पर्य होता है ईष्वर की कृपा या अनुग्रह पाने का मार्ग। इस तरह ये 8 कवि 'अष्टछाप' के कवि के रूप में जाने जाते हैं। सूरदास इनमें प्रमुख हैं और उन्हें 'अष्टछाप का जहाज' माना जाता है। सूर की प्रतिभा देखकर वल्लभाचार्य ने श्रीनाथ जी के कीर्तन का कार्य सौंपा, जहां से सूर ने कीर्तन करते हुए 'सूरसागर' के विषाल पद साहित्य की रचना की। उनके तीन प्रामाणिक ग्रंथ हैं– 1. सूरसारावली 2. साहित्य लहरी और 3. सूरसागर। 'सूरसरावली' की रचना षैली 'सूरसागर' से भिन्न है। इसे प्रारंभिक रचना के रूप में देखा जाता है। 'साहित्य लहरी' में रस, अलंकार और नायिका भेद से संबंधित पद के साथ दृष्टकूट पद मिलते हैं। इनका सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त और सर्वश्रेष्ठ रचना 'सूरसागर' है। 'सूरसागर' मूलतः 'श्रीमद्भागवत' पर आधारित है। इसमें दषावतारों की कथा है। इसके नवम् स्कंध में राम–कथा और दषम् स्कंध में कृष्णलीला का वर्णन है। इसमें कृष्ण का चरित्र विस्तार के साथ वर्णित है और उनकी लीलाओं का भी व्यापक वर्णन है।

सूरदास ने अपनी रचना में भक्ति, प्रेम–सौंदर्य और श्रृंगार की अजस्त्र धारा प्रवाहित की है। विष्णु के अवतार रूप में कृष्ण का ब्रह्म रूप में चित्रण अद्भुत और मनोहारी है। भारतीय धर्म परंपरा में रामावतार को 12 कलाओं और कृष्णावतार को 16 कलाओं में परिपूर्ण बतलाया गया। है। सूर ने कृष्ण की बाल–लीला और वात्सल्य वर्णन को अपने काव्य में प्रमुखता से स्थान

दिया है। वहीं राधा–कृष्ण की किषोरावस्था की प्रेम–लीलाओं के श्रृंगारपरक वर्णन का एक अपना आकर्षण है। राधा–कृष्ण के प्रेम, श्रृंगार, मिलन और विछोह आदि पक्षों का नाटकीय वर्णन अतुलनीय है। नारी मुक्ति और लोक–संस्कृति के चित्रण को भी प्रमुखता दी गयी है। मुक्तक काव्य की गेय पद परंपरा और ब्रजभाषा की कोमलता से उनकी रचना स्वाभाविक तौर पर सबकी समझ या बोध के लिए आसान हो गया था। सूरदास के महत्त्व को समझने के लिए इन बातों की चर्चा आवष्यक है।

पहली बात सोचने की यह है कि ऐसा क्या था, जो अचानक समाज में व्याप्त निर्गुण निराकार ब्रह्म की जगह सगुण साकार ब्रह्म की जरूरत आ पड़ी। इसके लिए दो बातें कही जा सकती है। एक, कबीर और उनके निर्गुण ब्रह्म की लोकप्रियता समाज को समग्रता में बांध नहीं सका और न ही सवर्णो का हितैषी था। समाज को समग्रता में समेट कर सभी के हित की बात समाज के लिए अनिवार्य हो गया था। यही कारण है कि सूरदास ने अपनी रचना के भीतर ही समाज में व्यापक प्रभाव से लैस कबीर और उनके निर्गुण, निराकार, अविगत ब्रह्म की जगह बड़ी षालीनता से सगुण, साकार, ज्ञात 16 कलाओं में निष्णात, विष्णु के अवतार ब्रह्म का चित्रण कर समग्र जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। सवर्ण समुदाय के लोग और ब्राह्मण वर्ग के लोग कबीर के घनघोर विरोधी थे। सूरदास भी ब्राह्मण समुदाय के थे। उनकी रचना में निर्गुण का प्रतीक 'उद्धव' है। आप ध्यान देंगे कि उद्धव के उपदेषों का गोपियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है–

''ऊधो मन नाहिं दस–बीस, एक हुतो सो गयो श्याम संग अब काहे को ईश।''

बल्कि इसके ठीक उलट भ्रमरगीत वर्णन में गोपियाँ ऊद्धव को मजाक का पात्र बनाकर खिल्ली उड़ाती है। विरह में जलती हुई गोपियाँ उद्धव को खरी–खोटी सुनाने के उद्देष्य से एक भौंरे को संबोधित करती हुई अपने मन के भावों को प्रकट कर उसे व्यापारी आदि कहती है। इस तरह सूर का भ्रमरगीत निर्गुण को खंडित कर सगुण की महिमा की प्रतिष्ठा है। सूर ने स्पष्ट तौर पर षालीनतापूर्वक निर्गुण का विरोध करते हुए लिखा है–

''अविगत गति कछु कहत न आवै.....सूर सगुण पद गावै।''

दूसरे, क्या निर्गुण निराकार ब्रह्म से लोग ऊब चुके थे? क्या ब्रह्म का 'अविगत' स्वरूप और 'साधनात्मक रहस्यवाद' होने के कारण लोगों के पल्ले नहीं पड़ रहा था ? क्या यह समय की मांग थी ? इस संबंध में स्पष्ट है कि कबीर के निर्गुण ज्ञान की आँधी के समक्ष सारे पंडित, तथाकथित ज्ञानी और काजी–मुल्ला अपने–अपने विस्तरा लेकर भूमिगत हो गये थे। कबीर की षब्दावली में सभी धूल–धूसरित हो गये थे। इन लोगों में उच्चवंषीय भावना भी व्याप्त थी, इसलिए कबीर को पटखनी देने की ताक में वे सभी भूमिगत थे। सूर के सगुण साकार ब्रह्म को पाते ही वे पुनः एकजुट होकर कृष्णलीला और रामलीला के साथ सत्संगों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया। उनके प्रचार–प्रसार के साथ लौकिक रस की परंपरा निर्जीव होकर सूखने लगी। जो षेष बचा–खुचा भाग था, वह तुलसी के 'राम चरित मानस' के आगमन और उसके व्यापक प्रचार–प्रसार के बाद लुप्तप्राय होने लगा। मतलब यह कि कबीर के निर्गुण निराकार ब्रह्म से जनसाधारण ऊबे नहीं थे, बल्कि सवर्णों के साथ ब्राह्मण और मुल्ला–काजी ऊब चुके

थे। सवर्ण समुदाय कबीर के निर्गुण का हिस्सा कभी नहीं बने और न ही वे उन्हें महत्त्व देते थे। समय पाकर निर्गुण और निम्न वर्गों के विरोध में ही सगुण का विस्फोट हुआ। इसी से अविगत की गति एक वर्ग को समझ में नहीं आ रही थी। कबीर का 'अविगत' और 'साधनात्मक रहस्यवाद' की कठोरता और ऊलटबाँसी सबकी सीमाओं के अन्तर्गत नहीं था, बल्कि कठिन और अबूझ था, जिसको लेकर सूर ने सगुण के तर्क प्रस्तुत किये। इन सबके बावजूद 'सगुण' के इस विस्फोट ने एक नयी सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने और समग्रता में सबको बांधने का प्रयास किया। सूरदास ने कबीर के लौकिक रस की षुष्क निर्जीव परंपरा को एक नये साहित्य से सरस बनाकर नया जीवन दिया। उन्होंने उसमें ईष्वरीय गुणों एवं उर्जा षक्ति भरकर भगवान कृष्ण के गुणगाण के साथ एकांत भाव से बांधकर साहित्य को अतिषय उत्कर्ष प्रदान किया और उसका उच्चतम विकास किया।

सूर के पद में वस्तु वर्णन तथा जीवन के विविध क्रियाकलापों, चेष्टाओं, मनोभावों, संवेदनाओं और विविध भाव–भंगिमाओं का सूक्ष्म और विषद वर्णन किया गया है। इसे देखकर कोई भी कह सकता है कि सूर जन्म से अन्धे नहीं थें इस संबंध में आचार्य रामचंद्र षुक्ल ने लिखा है कि ''सूर ने जो वर्णन अपनी बंद आँखों से किया है, वह कोई खुली आँखों से क्या कर सकता है। उनका कृष्ण प्रकृति में विचरण करने वाला एक सामान्य व्यक्ति की तरह दिखता है। उनका आचरण–व्यवहार भी समान्य है। बाल लीला वर्णन में कहीं अतिषयोक्ति नहीं है। षिकवा–षिकायत और झूठ भी जनसामान्य है–

'मैया मोहि मैं नहीं माखन खायो।'

X X X

और 'मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।'

X X X

तथा 'घुटुरवनि चलत रेणु तन मंडित मुख दधि लेप किये।'

सूर का भाव वर्णन और सौंदर्य वर्णन अत्यंत प्रभावकारी है। राधा के रूप–सौंदर्य को पहली बार देखकर भगवान कृष्ण भी ठगे रह जाते हैं और विस्मय होकर पूछते हैं–''पूछत ष्याम कौन तू गोरी ?'' 'तू कौन है ? कहां से आयी है ? ब्रज की गलियों में कभी देखा नहीं। इसी तरह राधा और कृष्ण के संयोग श्रृंगार का एक चित्र है–

''अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर, श्याम भुजा अपने उर धरिया
यों लपटाई रहे उर उर ज्यों, मरकत मणि कंचन में जरिया।''

दिनांक : 16 / 04 / 2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**